एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–9 से 12

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य

(जुलाई–2024 और जनवरी –2025) सत्रों के लिए

जुलाई–2024: जून, 2025 सत्रांत परीक्षा के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथिः 31 मार्च, 2025

जनवरी–2025: दिसंबर 2025 सत्रांत परीक्षा के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि : 30 सितंबर, 2025

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

मॉड्यूल '1' – कहानीः विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.: 9 से 12 तक)

एम.एच.डी.–09
कहानी:स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–09 / टी.एम.ए. / 2024–2025
कुल अंक : 100

खंड 'क'

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×4 = 60

(क) कथा की लिखित परंपरा पर प्रकाश डालिए।

(ख) आधुनिक विधा के रूप में कहानी के उदय को रेखांकित कीजिए।

(ग) नवजागरण कालीन भारतीय कहानी पर प्रकाश डालिए।

(घ) अमेरिका में कहानी के उद्भव और विकास की चर्चा कीजिए।

(ड.) 'कथा' और 'आख्यान' का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके परस्पर संबंध और विविध रूपों को रेखांकित कीजिए।

खंड 'ख'

1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : **10 × 4 = 40**

(क) जर्मनी में कहानी

(ख) लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी

(ग) पश्चिमी एशिया में कहानी

(घ) नई कहानी

एम.एच.डी.–10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–10
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–10 / टी.एम.ए. / 2024–2025
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:** **10 x 2 = 20**

(क) ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास मिटती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, उसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्म भर की कमाई है।

(ख) आज चालीस वर्षों से घर के प्रत्येक मामले में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। उसने सौ कहा तो सौ खर्च किये गये, एक कहा तो एक! किसी ने मीन–मेख न की। यहाँ तक कि पं. अयोध्यानाथ भी उसकी इच्छा के विरूद्ध कुछ न करते थे; पर आज उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उसके हुक्म की उपेक्षा की जा रही है! इसे वह क्योंकर स्वीकार कर सकती!

(ग) शंकर ने साल भर तक कठिन तपस्या की; मीयाद के पहले रुपये अदा करने का उसने व्रत सा ले लिया। दोपहर को पहले भी चूल्हा न जलता था, चबेने पर बसर होती थी, अब वह भी बंद हुआ, केवल लड़के के लिए रात को रोटियाँ रख दी जातीं। पैसे रोज का तम्बाकू भी पी जाता था, यह एक व्यसन था, जिसका वह कभी त्याग न कर सका था। अब वह व्यसन भी इस कठिन व्रत की भेंट हो गया। उसने चिलम पटक दी, हुक्का तोड़ दिया और तम्बाकू की हाँड़ी चूरचूर कर डाली। कपड़े पहले भी त्याग की चरम सीमा तक पहुँच चुके थे, अब वह प्रकृति की न्यूनतम रेखाओं में आबद्ध हो गये।

2. प्रेमचंद की कहानियों में निहित राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए। 16

3. 'मंदिर' और 'सद्गति' कहानी के आधार पर प्रेमचंद के दलित जीवन संबंधी विचारों की विवेचना कीजिए। 16

4. प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त जाति उन्मूलन की अवधारणा का विवेचन कीजिए। 16

5. प्रेमचंद की कहानियों के शिल्प–पक्ष पर विचार कीजिए। 16

6. प्रेमचंद की कहानी कला के मूल तत्वों को संक्षेप में समझाइये। 16

एम. एच. डी.–11
हिन्दी कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–11
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–11 / टी.एम.ए. / 2024–2025
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:** **10x2=20**

(क) वह चीफ़ के कमरे से निकलकर अपने काम पर लौटा तो मिस्त्री पास बिठाकर समझाने लगा, ''इस दुनिया में सबसे मेल–जोल रखकर चलना पड़ता है। नदी किनारे घास पानी के साथ थोड़ा झुक लेती है और फिर उठ खड़ी होती है, लेकिन बड़े–बड़े पेड़ धार के सामने अड़ते हैं और टूट जाते हैं। साहब ने तुम्हारी बदली कास्टिक टैंक पर कर दी है। बड़ा सख्त काम है, अब भी साहब को खुश कर सका तो बदली रूक सकती है।''

(ख) एक पेड़ के नीचे खड़े होकर हम दोनों बात करते हुए नीचे एक पत्थर पर बैठ गये। उसने कहा, ''देखा नहीं! ब्रिटिश–अमरीकी या फ्रान्सीसी कविता में जो मूड्स जो मनःस्थितियाँ रहती हैं– बस वे ही हमारे यहाँ भी हैं, लायी जाती हैं। सुरूचि और आधुनिक भावबोध का तकाजा है कि उन्हें लाया जाये। क्यों? इसलिए कि वहाँ औद्योगिक सभ्यता है, हमारे यहाँ भी। मानों कि कल–कारखाने खोले जाने से आदर्श और कर्त्तव्य बदल जाते हों।''

(ग) राजनीतिक हमजोलियों के बीच उसने घोषणा कर दी थी,''मैंने दहेज नहीं लिया है और एक गरीब लड़की का उद्धार किया है।'' वह अपनी इस गप्प पर मुग्ध होता और अकस्मात् दहेज प्रथा के विरुद्ध संक्षिप्त भाषण करने लगता है। वह कहता, ''भारतवर्ष के नवयुवकों को बाल–विधवाओं और विपन्न कुँवारी कन्याओं के उद्धार के लिए आगे बढ़कर महानता की मिसाल कायम करनी चाहिए। मुझे देखिए, मैंने तो दुखियारी की ज़िन्दगी सँवार दी। मेरी बीवी सावित्री आज सुखी है और मेरा एहसान मानती है।''

2. शानी की कहानियों के महत्वपूर्ण बिंदुओं की पड़ताल कीजिए। 16

3. 'राजा निरबंसिया' कहानी की कथावस्तु का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। 16

4. रवीन्द्र कालिया की कहानी 'गौरैया' की अंतर्वस्तु को स्पष्ट कीजिए। 16

5. 'सिलिया' कहानी में अभिव्यक्त दलित नारी चेतना का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. 'ज्ञानरंजन की कहानी 'बर्हिगमन' की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। 16

एम. एच. डी.–12
भारतीय कहानी
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–12
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–12/टी.एम.ए./2024–2025
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10x2=20**

(क) कुछ समय को मेरा मन उस बाग के सौंदर्य पान से तृप्त होकर अवर्णनीय सुख अनुभव करने लगा। बाग की ठंडक हवा में घुलकर बह रही थी। कुएं के चारों ओर तरह–तरह के फूल लगे थे। उनकी सारी सुगंध ठंडी हवा लूटे जा रही थी। नाना जाति के पक्षियों का कलरव आकाश में, पेड़ों में, पौंधों में सब ओर सुनाई पड़ रहा था। मेरा हृदय पक्षियों के साथ पक्षी, और फूलों के साथ फूल बन बैठा। तब ऐसा लगा, पता नहीं क्यों कविगण अनदेखे स्वर्ग का वर्णन करते हैं। जहां सुख होता है वहीं स्वर्ग होता है।

(ख) कुछ दिन पहले पूर्णिमा की एक रात राव साहब और उनकी पत्नी चाँदनी में सैर के लिए निकले थे। ऐसे समय काम से लौटता हुआ अम्माजी का बाप उनके सामने पड़ गया। इतना बड़ा आदमी अब क्या पहचानेगा! यह सोचता हुआ वह सिर झुकाकर आगे बढ़ने लगा। लेकिन राव साहब ने ही उसे पुकारा। वह भी नाम लेकर! अम्माजी का बापू फूल उठा था। उस पूरी रात घर में उन्हीं लोगों को लेकर बातें होती रहीं। उसके अगले ही दिन अम्माजी को ले जाकर उसने परिचय कराया था।

(ग) अपने होठों पर पवित्र मुस्कराहट छितराते कबीर झटपट उठ खड़ा हुआ। हैरत–भरी निगाहों से लोगों के चेहरे पर बारी–बारी से देख रहा था कि ठाकुर झुँझलाहट दरसाते कहने लगा, ''बावले की तरह टग–भग क्या देख रहा है? तेरे अहोभाग्य कि देश के मालिक, तीन लोक के नाथ खुद तेरे घर पधारे हैं, तेरी कारीगरी देखने की खातिर। अब उल्लू की तरह आँखें क्या फाड़ रहा है? कालीन या शॉल हो तो नजर कर।''

2. कालीपट्नम रामाराव की कहानियों की सामाजिक दृष्टि पर प्रकाश डालिए। **16**

3. 'पाँच पत्र' कहानी में अभिव्यक्त जीवन दर्शन का विश्लेषण कीजिए। **16**

4. 'चिता' कहानी की अन्तर्वस्तु का विश्लेषण करते हुए उसकी शिल्पगत विशेषताओं की चर्चा कीजिए। **16**

5. गोपीनाथ मंहति की कहानियों में आए आदिवासी जीवन का मूल्यांकन कीजिए। **16**

6. 'अपने लिए शोकगीत' कहानी के प्रमुख चरित्रों पर प्रकाश डालिए। **16**